PAGE NO.
DATE :

DISE

District Information System For Edu

जिला सूचना तन्त्र

DISE का प्रारम्भ जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP) 1995 मे पहली बार प्रयोग किया गया।

विद्यालय के भौतिक एवं मानवीय संसाधनो की सूचना एकत्रित करने की प्रणाली है। इस प्रणाली को 1995 से UNICEF के वित्तीय सहयोग से तथा NUEPA के माध्यम से चलाई जा रही है। तथा इसका संचालन NUEPA का EMIS विभाग करता है जो भारत सरकार के अधीन है।

DISE के माडल को 7 भागो मे बाटा गया है।

(1) आकड़ो पर आधारित संगठन
(2) विद्यालय के आँकड़े
(3) गाँव के आँकड़े
(4) विद्यालय से सम्बन्धित रिपोर्ट
(5) रिपोर्ट का विश्लेषण
(6) ग्राफिक
(7) डिजाइनर

PAGE NO.
DATE: 30/11/2020

DISE के कार्य

DISE के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा (01-08 कक्षा) से सम्बन्धित विद्यालयों की सूचनाएँ एकत्रित की जाती थी।

नोट माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्धित सूचनाएं SEMIS — सेकेण्डरी एजुकेशन मैनेजमेन्ट ~~सिस्टम~~ इनफोरमेशन सिस्टम के द्वारा सूचना एकत्रित की जाती है।

अब DISE का नाम U-DISE Unified District information ~~Education~~ System For Education

2012-13 से DISE तथा SEMIS दोनो को मिलाकर U-DISE का विकास किया गया।

इसका क्रियान्वयन SSA व RMSA के माध्यम से किया जाता था। किन्तु वर्ष 2018 मे SSA व RMSA को मिलाकर समग्र शिक्षा अभियान की की शुरुआत की गई। जिसकी NODAL एजेन्सी राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् जयपुर है।

PAGE NO.
DATE :

निजी क्षेत्रो की भागीदारी

गैर सरकारी संगठनो (N.G.O) सहित निजी क्षेत्र की बढी हुई भागीदारी थी। वर्तमान में ये निजी क्षेत्र लगभग 5% माध्यमिक स्कूलो और 58% उच्चतर माध्यमिक स्कूलो का प्रबन्धन करते है।

- इन बच्चो के लिए अवसर प्रदान किये जाय जो सम्पर्क केन्द्रो और मल्टी मीडिया पैकेजो का उपयोग करके राजकीय व राज्यभुक्त स्कूलो के माध्यम से औपचारिक शिक्षा प्रणालियों मे खुद को नामांकित नामांकित करने मे सक्षम नही थे
- इसने केन्द्र सरकार से वित्तीय सहायता के साथ विशेष रूप से पर्यावरण शिक्षा विज्ञान गणित और कम्पयूटर साक्षात्कार और शिक्षा की गुणवत्ता पर अत्यधिक सुधार पर जोर दिया

संशोधित NPE नीति 1992 के बाद पाठ्यक्रम मे संशोधन, मूल्य शिक्षा के लिए संसाधन केन्द्र व कम्पयूटर सहायता प्राप्त शिक्षा के लिए राजकीय केन्द्र आदि जैसी नई पहल की गयी।

Page No.
Date :

शिक्षक –

शिक्षा देने वाले को शिक्षक (अध्यापक) कहते हैं। शिक्षिका (अध्यापिका) शिक्षक (अध्यापक) का स्त्रीलिंग रूप है। यह एक वचन या बहुवचन दोनो तरह से प्रयुक्त किया जा सकता है।

शिष्य के मन मे सीखने की इच्छा को जागृत करा देने वाला ही शिक्षक कहा जाता है। शिक्षक के द्वारा व्यक्ति के भविष्य को बताने वाला कहा जाता है। शिक्षक का स्थान भगवान से ऊपर प्राचीन काल मे बताया गया। संत कबीर कहते है कि गुरु व गोविन्द दोनो मे सबसे पहले गुरु का सम्मान करना चाहिए।

शिक्षक पथ प्रदर्शक होता है। छात्र को उसके जीवन मे सच्चा मार्ग प्रसस्त करने वाला होता है। बिना गुरु का ज्ञान सम्भव नही है। प्राचीन काल मे एकलव्य को भी ज्ञान के लिए द्रोणाचार्य की प्रतिमा से ज्ञान लेना पड़ा था।

Page No.
Date :

स्कूल का अर्थ एवं परिभाषा

स्कूल की उत्पत्ति एक ग्रीक शब्द से हुई इस शब्द का अर्थ अवकाश यह विचित्र सा लगता है। परन्तु यह वास्तविक है कि प्राचीन काल में यूनान इन अवकाश काल को ही आत्म विकास समझा जाता था जिसका अभ्यास अवकाश नामक निश्चित किया जाता था जिसका अभ्यास उ

अतः अवकाश शब्द का अर्थ है आत्म विकास अथवा शिक्षा। शनै – शनै ए अवकाशालय ऐसा स्थान बन गये जहाँ पर शिक्षक किसी निश्चित योजना के अनुसार एक निश्चित पाठ्यक्रम को एक निश्चित समय के भीतर समाप्त करने लगे इस प्रकार आधुनिक समय मे स्कूल का एक भौतिक अस्तित्व होता है। जिसक चार दीवारी मे बालक को शिक्षा प्रदान की जाती है।

vikaspedia.in

Page No.
Date :

अध्यापक की जवाबदेही

शिक्षा के राष्ट्रीय आयोगों, शिक्षा समितियों तथा शिक्षाविदों ने विद्यालय की शिक्षा हेतु कार्यक्रमों, भूमिकाओं उत्तरदायित्वों तथा जवाबदेही के सम्बन्ध में सुझाव तथा संस्तुतियां दी हैं। विद्यालय की शिक्षा में प्राचार्य एवं अध्यापकों की भूमिका तथा उत्तरदायित्व होता होता है। विद्यालय की संचालन की जवाबदेही प्राचार्य व अध्यापक की होती है

जाकिर हुसैन के शब्दों में →

हमारे सभी विद्यालय का कार्य क्षेत्र समुदाय होगे। इस शैक्षणिक संस्थाओं में छात्रों को प्रयोग करने खोज करने, कार्य करने रहने की सुविधाएं प्राप्त होनी चाहिए जहां कार्य चरित्र का निर्माण करेगा। जहां रहना जीवन का निर्माण करेगा सभी स्वस्थ कार्य और अच्छे जीवन की तरह वे उन सहयोगी सामुदायिक घरों की तरह बन जायेंगे।